मलबार में शंबु पालन के स्वयं सहायक संघों की गतिशीलता और लिंग परिप्रेक्ष्य

विपिन कुमार वी.पी.*, अशोकन पी.के., मोहम्मद के.एस., कृपा वी., गीता शशिकुमार, विद्या आर. और आतिरा पी.वी.
*भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची, केरल,
लेखक से संपर्कः vipincmfri@gmail.com

प्रस्तावना

समुद्री संवर्धन के विकास में स्वयं सहायक संघ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। केरल के तटीय क्षेत्रों में स्वयं सहायक संघों द्वारा सफल रूप से चलाए जाने वाला शंबु पालन (mussel farming) समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर का अत्यंत लाभकारी उद्यम साबित किया गया है। केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ), कोच्ची ने केरल के उत्तर मलबार के नदीमुखों में शंबु पालन का सफलतापूर्वक निदर्शन किया है, जिसका तटीय मछुआरों, विशेषतः महिलाओं के बीच सकारात्मक स्वीकार भी हुआ है। भारत के पश्चिम तट पर स्थित समुद्रवर्ती राज्यों में अरब सागर की ओर बहने वाली अनेक नदियाँ हैं। अधिक गहराई के अपतटीय स्थानों में शंबु पालन के लिए लंबी डोर एकक और बेडाओं का उपयोग किया जाता है, दोनों तरीकाएं सफल देखे गए हैं। सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों ने जिला प्रशासन से परामर्श करके यह प्रौद्योगिकी सक्रिय महिला हितकारियों को हस्तांतरित करने की महायोजना बनायी है।

केरल राज्य में स्थानीय स्वयं शासकों के नेतृत्व में कार्यरत सामूहिक कार्यक्रम की गरीबी उन्मूलन मिशन के अंदर स्थापित कुटुम्बश्री कार्यक्रम द्वारा महिला स्वयं सहायक संघ चलाए जाते हैं। उत्तर केरल के मलप्पुरम जिले के कडलुन्डी में कुटुम्बश्री कार्यक्रम के स्वयं सहायक संघों द्वारा सफल रूप से द्विकपाटी पालन (bivalve farming) किया जाता है। कुटुम्बश्री कार्यक्रम में केरल के 50% से अधिक परिवार शामिल हुए हैं और 41 लाख सदस्य भी हैं। कुटुम्बश्री के तीन घटक याने कि माइक्रो क्रेडिट, उद्यमिता और सशक्तीकरण होते हैं और इस कार्यक्रम के अंदर कम सुविधायुक्त महिलाओं की समस्याओं का समाधान किया जाता है और उनको और अधिक सम्मानजनक जीवन और अच्छा भविष्य प्रदान किया जाता है। कुटुम्बश्री मिशन की सामुदायिक विकास योजना के अंदर वल्लिकुन्नु पंचायत में 62 मछुआरिनों को प्रशिक्षण देते हुए कडलुन्डी के मलबार तटीय भागों में द्विकपाटी पालन प्रौद्योगिकी लोकप्रिय बनाने का प्रयास शुरू किया गया। इन महिलाओं ने 60 सदस्यों वाले 12 स्वयं सहायक संघों का रूपायन किया, जिनमें सब्सिडी और एस एच जी को उचित राशि लाभांश के साथ ऋण लेने का प्रावधान है। एस एच जी के महिला सदस्य अपने उत्तरदायित्व से शंबु पालन उद्यम के लिए ऋण लेते हैं। हर एक एस एच जी के पांच सदस्यों के पास शक्त आंतरिक संशोधन द्वारा परस्पर विश्वास के दृढ़ आधार का संयुक्त उत्तरदायित्व है।

कार्यप्रणाली

मूलतः यह शंबु पालन में लिंग परिप्रेक्ष्य पर की व्यावहारिक सफलता पर किए जाने वाला वर्णनात्मक अध्ययन होने के नाते जेन्डर मुख्यधारा के संबंध में विशेषज्ञों के साथ परामर्श करके और समुद्री संवर्धन की प्रौद्योगिकियों का विकीर्णन किए गए स्थानों के प्रशिक्षित एन्यूमरेटरों की सहायता से प्राथमिक आंकडे संग्रहित किए गए। इसी तरह द्वितीय स्तर के आंकडा संग्रहण ने भी मुख्य भूमिका निभायी।

एक स्वयं सहायक संघ (एस एच जी) में सामान्य बंधन जैसे जाति, उपजाति, समुदाय, जन्म स्थान, गतिविधि आदि से जुडे हुए सदस्य शामिल हैं। इन सदस्यों के बीच के आपसी बल से इन संघों की ग्रुप गतिशीलता आकलित की जाती है। संघों का रूपायन, संरचना एवं प्रक्रिया, कार्यविधि तथा वैयक्तिक सदस्यों एवं संगठन पर प्रभाव आदि संघों का आंतरिक स्वभाव हैं (लेविन आदि, 1960)। ग्रुप गतिशीलता पर किए गए गहन अध्ययन में फीफर एवं जोण्स (1972) ने ग्रुप के रूपायन, ग्रुप नेतृत्व की रीति, सदस्यता एवं नेतृत्व की कुशलता के प्रशिक्षण की राशि, ग्रुपों को दिए गए कार्य, इस से पहले ग्रुप की सफलता या असफलता आदि घटकों की पहचान की है। एस एच जी के महिला सदस्यों के समाज आर्थिक और व्यवहार के पहलुओं पर भी आंकडा संग्रहित किए गए। वर्तमान अध्ययन में स्वयं सहायक ग्रुप की मछुआरिनों की आजीविका पर भी निरीक्षण किया गया है। उचित प्रकार के सूचकांकों जैसे जी डी ई आइ के विकास से एस एच जी की ग्रुप गतिशीलता प्रभावकारिता के आश्रित परिवर्ती घटकों का निर्धाराण किया गया (विपिनकुमार और सिंह, 1998) और सहभागिता प्रोफाइल, बाधा का विश्लेषण आदि लिंग परिप्रेक्ष्यों का निर्धारण करने हेतु विवेकाधीन पैमाने भी विकसित किए गए। चुने गए बारह उप आयामों जैसे सहभागिता, प्रभाव और प्रभाव की शैली, निर्णय लेने का तरीका, कार्य, अनुरक्षण कार्य, ग्रुप का वातावरण, सदस्यता, भावनाएं, मान, सहानुभूति, आपसी विश्वास तथा एस एच जी की उपलब्धियाँ के साथ विकसित मानकीकृत नयाचार से एस एच जी सूचकांक का निर्धारण किया गया।

लिंग परिप्रेक्ष्य में निर्णय लेने के तरीके एवं लिंग आवश्यकता विश्लेषण का निर्धारण करने के लिए शंबु पालन से जुडी हुई विविध प्रकार की गतिविधियों में एस एच जी के परिवारों के सदस्यों के नर एवं मादा समकक्षों की प्रतिक्रिया अलग अलग रूप से निर्धारित की गयी। भारत के समुद्री मात्स्यिकी के संदर्भ में मछुआरों में निर्णय लेने का पहलु अत्यंत महत्व का है। द्विकपाटी पालन की विभिन्न गतिविधियों में निर्णय लेने की लिंग प्रतिक्रिया याने कि केवल महिला, पुरुष < महिला, पुरुष = महिला, पुरुष > महिला और केवल पुरुष सूचित किए गए हैं। यह रोचक बात है कि द्विकपाटी पालन की विभिन्न गतिविधियों के विभिन्न स्तरों में 'केवल पुरुष' द्वारा निर्णय लिए जाते हैं। इसी तरह द्विकपाटी पालन की विभिन्न गतिविधियों में समकक्षों द्वारा काम की आवश्यकता और प्रमुखता के अनुसार निर्णय लिए जाते हैं। उद्देश्य के अनुसार कालानुक्रमिक रूप से परिणाम नीचे दिए जाते हैं

3. परिणाम

वर्तमान अध्ययन मामला अध्ययन की व्याख्या पर प्रमुखता देने की वजह से परिणामों का व्याख्यात्मक विवरण नीचे प्रस्तुत किया जाता हैः

3.1 मलबार मात्स्यिकी सेक्टर में शंबु पालन महिला स्वयं सहायक संघों का मामला अध्ययन

मात्स्यिकी सेक्टर में विशेषतः प्रग्रहण मात्स्यिकी की विविध सहायक गतिविधियों जैसे प्रसंस्करण, मूल्य वर्धन, छंटायी, वर्गीकरण, छिलका उतारना, विपणन तथा मछली प्रजनन एवं पालन से बाज़ार में विपणन में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। तटीय क्षेत्र के मछुआरा समुदाय अपनी आजीविका के लिए पूर्णतः समुद्री संपदाओं पर निर्भर करते हैं। मात्स्यिकी तथा विविध सेक्टरों के उचित माइक्रो एन्टरप्राइसों द्वारा चलाए जाने वाले समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर की मछुआरिनों के स्वयं सहायक संघ उनके परिवारों के अनुरक्षण और समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। मात्स्यिकी सेक्टर में तटीय समुदायों की ऋणग्रस्तता कम करने में माइक्रोफिनान्स संस्थाएं प्रमुख भूमिका निभाती हैं (विपिनकुमार आदि, 2013)।

यह बड़ी चिंता की बात है कि केरल राज्य में मत्स्यन के आर्थिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक महत्व के अतिरिक्त अधिकाधिक मछुआरिन मत्स्यन उद्योग के लाभों से न जुड़कर और आर्थिक दृष्टि से वंचित होकर

समाज की मुख्य धारा से दूर हैं (कुरियन, 1994)। केरल का मलबार क्षेत्र हमेशा बाकी जिलाओं की अपेक्षा विकास की दृष्टि से पीछे पड़ गया है और केरल की तट रेखा का आधा भाग मलबार में है (एम सी आइ टी आर ए, 2003)। लेकिन ज्यादातर मछली उत्पादन होने पर भी मछुआरों, विशेषतः मछुआरिनों को बहुत कम लाभ मिलता है, क्योंकि मछुआरा समुदाय को मात्स्यिकी विकास के साथ भेदभाव किया गया है।

मलबार के तटीय भाग में मलप्पुरम जिले के वल्लिकुन्नु पंचायत के कडलुन्डी में पंचायत की सामुदायिक विकास योजना (सी डी एस) के अंदर 62 मछुआरिनों को सी एम एफ आर आइ के कार्मिकों द्वारा शंबु पालन प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण दिया गया। महिला एस एच जियों द्वारा शंबु पालन शुरू किए जाने के पहले वर्ष में ही इस पर अध्ययन किया गया। पहले वर्ष में संग्रहण का परिणाम औसत था। अध्ययन के भाग के रूप में मलबार के समुद्रवर्ती स्थानों में मोलस्क पालन प्रौद्योगिकियों के आंकडा संग्रहण के औजारों में किए गए विकास एवं परिवर्तन का आकलन भी किया गया। अध्ययन के लिए आयु, शिक्षा, वार्षिक आय, धंधा, समाज-आर्थिक स्तर, विस्तार अभिमुखीकरण, वैज्ञानिक अभिमुखीकरण, जनसंपर्क माध्यम में सहभागिता, सामाजिक सहभागिता, विनम्रता, ज्ञान आदि वैयक्तिक तथा सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विशेषताएं चुनी गयी। इसी प्रकार अभिवृत्ति, बैठकों के आयोजन, रजिस्टरों का अनुरक्षण आदि गतिविधियों पर भी अध्ययन किया गया। सारणी 1 में अध्ययन के लिए चुने गए 12 एस एच जियों, स्थानों तथा आंकडा विश्लेषण के बाद प्राप्त जी डी ई आइ स्कोर दिए गए हैं:

वैयक्तिक एवं सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के मात्रा निर्धारित मूल्य प्रतिशत में सारणी 2 में दिए गए हैं, जिस में चुने गए स्वतंत्र परिवर्तनशील सामग्रियों में क्रेडिट अभिमुखीकरण उच्चतम देखा गया है।

उप आयामों के सरल सहबंधों का विश्लेषण सारणी 3 में दिया गया है और यह पाया गया कि एस एच जियों की उपलब्धि सबसे प्रमुख और सहभागिता एवं ग्रुप का वातावरण इसके बाद के प्रमुख आयाम हैं।

आश्रित परिवर्तनशील ग्रुप गतिशीलता प्रभावकारिता (जी डी ई) के साथ असोसिएशन के स्तर का निर्धारण करने हेतु वैयक्तिक एवं समाज-मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के सरल सहसंबंध विश्लेषण के परिणाम सारणी 4 में दिए गए हैं। यह देखा गया कि धंधा, मत्स्यन अनुभव आदि का जी डी ई पर कोई प्रभाव नहीं था और अन्य सभी वेरियबिलों का सही सकारात्मक सहसंबंध देखा गया।

सारणी 1: चुने गए 12 एस एच जी तथा स्थान

क्र.सं.एस एच जी का नाम	सदस्यों की संख्या	स्थान	जी डी ई आइ स्कोर	
1.	लिना	5	वल्लिकुन्नु, हिरोसनगर	0.65
2.	पुतुमा	5	वल्लिकुन्नु, हिरोसनगर	0.78
3.	जलमैत्री	5	वल्लिकुन्नु, हिरोसनगर	0.67
4.	तीरम	5	वल्लिकुन्नु, हिरोसनगर	0.77
5.	ओलम	5	वल्लिकुन्नु, हिरोसनगर	0.78
6.	सोफ्ट	5	वल्लिकुन्नु, हिरोसनगर	0.68
7.	चिप्पी	5	वल्लिकुन्नु, हिरोसनगर	0.79
8.	गंगा	5	वल्लिकुन्नु, हिरोसनगर	0.70
9.	कीर्ति	5	वल्लिकुन्नु, हिरोसनगर	0.71
10.	कनकम	5	वल्लिकुन्नु, हिरोसनगर	0.69
11.	मुत्तुचिप्पी	5	कडलुन्डी नगरम	
12.	सागरराणी	5	कडलुन्डी नगरम	

3.2. द्विकपाटी पालन के स्वयं सहायक संघों का लिंग परिप्रेक्ष्य

द्विकपाटी पालन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में स्त्री पुरुष की सहभागिता, लिंग आवश्यकता, निर्णय लेना और संपदाओं की स्वीकार्यता एवं नियंत्रण का विश्लेषण किया गया। उपर्युक्त पहलुओं पर पुरुषों एवं महिलाओं की राय समान देखी गयी। फिर भी गाँवों में विभिन्न प्रतिक्रियाएं थीं। हिसाब एवं पैसे का लेन-देन आदि कार्य महिलाओं के नियंत्रण में थे। सहभागिता और आवश्यकता में दोनों पुरुष एवं महिला की समान राय थी (साहू आदि, 2009)। लिंग मुख्य धारा के लिए समाज-आर्थिक, प्रौद्योगिकीय और निर्यात समर्थन की आवश्यकता का विश्लेषण किया गया। शंबु/ शुक्ति पालन में संपदाओं की स्वीकार्यता के संबंध में जेन्डर आवश्यकता, द्विकपाटी पालन की विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता, विभिन्न स्तरों में

सारणी 2: वैयक्तिक एवं सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के मात्रा निर्धारित मूल्य

क्र.सं.	वेरियबिल	मात्रा निर्धारित मूल्य प्रतिशत में
1.	क्रेडिट अभिमुखीकरण	71.5%
2.	आर्थिक अभिप्रेरण	66.0%
3.	वैज्ञानिक अभिमुखीकरण	59.5%
4.	जोखिम अभिमुखीकरण	61.0%
5.	समाज आर्थिक स्तर	46.5%
6.	सामाजिक सहभागिता	78.0%
7.	विस्तार अभिमुखीकरण	59.5%
8.	जनसंपर्क माध्यम में सहभागिता	79.0%
9.	कोस्मोपोलाइटनेस	67.0%

सारणी 3: जी डी ई आइ के साथ उप आयामों के सरल सहबंधों का विश्लेषण

क्र.सं.	वेरियबिल	मात्रा निर्धारित मूल्य प्रतिशत में
1.	सहभागिता	0.947**
2.	प्रभाव एवं प्रभाव की शैली	0.938**
3.	निर्णय लेने की प्रक्रिया	0.919**
4.	कार्यक्रम	0.907**
5.	अनुरक्षण कार्य	0.913**
6.	ग्रुप का वातावरण	0.945**
7.	सदस्यता	0.874**
8.	भावनाएं	0.879**
9.	मान	0.884**
10.	सहानुभूति	0.869**
11.	पारस्परिक विश्वास	0.918**
12.	एस एच जी की उपलब्धियाँ	0.949**

** 1% स्तर के महत्व पर महत्वपूर्ण है

सारणी 4: जी डी ई के साथ वैयक्तिक एवं समाज-मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का संबंध

परिवर्तनशीलता	विशेषता	सहसंबंध गुणक
1.	आयु	0.087
2.	शिक्षा	0.310**
3.	धंधा	0.058
4.	वार्षिक आय	0.503**
5.	फार्म हाउसहोल्ड आकार	0.508**
6.	मत्स्यन अनुभव	0.147
7.	समाज-आर्थिक स्तर	0.871**
8.	विस्तार अभिमुखीकरण	0.840**
9.	वैज्ञानिक अभिमुखीकरण	0.813**
10.	जनसंपर्क कार्यक्रम में सहभागिता	0.479**
11.	सामाजिक सहभागिता	0.687**
12.	कोस्मोपोलाइटनेस	0.678**
13.	ज्ञान	0.767**
14.	एस एच जी के प्रति अभिवृत्ति	0.820**

15.	हस्तक्षेप करने की एजेन्सी के प्रति अभिवृत्ति	0.791**
16.	अन्य सदस्यों के प्रति अभिवृत्ति	0.782**
17.	सूचना स्रोत उपयोग का तरीका	0.847**

जेन्डर आवश्यकता पर परिवार के पुरुष तथा महिला सदस्यों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण किया गया।

शंबु पालन की विभिन्न गतिविधियों की सहभागिता में लिंग प्रतिक्रिया जैसे केवल महिला, पुरुष < महिला, पुरुष = महिला, पुरुष > महिला और केवल पुरुष का विश्लेषण किया गया। द्विकपाटी पालन में पुरुष प्रधान कार्यकलापों में बांस के खंभे एवं रस्सी बांधना, जाल में संतति रोपण, पालन स्थान तक डोंगी से चलना, संग्रहण, नदीमुख तक भाड़े पर डोंगी चलाना, शंबु स्पैटों का संग्रहण, संग्रहणोत्तर व्यवहार, बेडा निर्माण, संतति रोपण दर एवं रोपण, स्थान चयन, तट तक का परिवहन तथा संतति रोपित रस्सी बेडे में बांधना आदि सम्मिलित हैं। लेकिन महिला प्रधान कार्यकलापों में रिकॉर्डो का अनुरक्षण, कवच निपटान, जीवित और छिलका निकाले गए शंबुओं का विपणन, छिलका उतारना आदि सम्मिलित हैं।

शंबु पालन की विभिन्न गतिविधियों में निर्णय लेने के संबंध में पुरुष एवं महिलाओं की प्रतिक्रिया अलग रूप से सारणी 5 में दी गयी है। भारतीय परिवेश में समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में मछुआरों का निर्णय लेने का पहलु अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह रोचक बात है कि शंबु पालन की विभिन्न गतिविधियों में निर्णय लेने की प्रतिक्रिया में 'केवल पुरुष' पहलु दिखाया गया है। लेकिन हिसाब एवं रिकार्ड अनुरक्षण, क्रेडिट, छिलका उतारना आदि गतिविधियों में दोनों पुरुष एवं महिला समान रूप से निर्णय लेते हैं। विपणन कार्य में केवल महिलाएं निर्णय लेती हैं। परिणामों से वल्लिकुन्नु पंचायत में शंबु पालन की गतिविधियों के विभिन्न स्तरों में चुने गए परिवारों के पुरुष एवं महिला प्रतिनिधियों की निर्णय लेने की क्षमता सूचित की गयी हैं।

द्विकपाटी पालन से संबंधित विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में पुरुष एवं महिला समकक्षों द्वारा सौंपी गयी जेन्डर आवश्यकताओं का विवरण अलग अलग रूप से सारणी 6 में दिया गया है। जेन्डर आवश्यकताओं में दोनों समकक्षों द्वारा दिखायी गयी

सारणी 5: द्विकपाटी पालन के विभिन्न स्तरों में निर्णय लेना

निर्णय लेने की गतिविधि का नाम	केवल महिला		पु < म		पु = म		ष > म		केवल पुरुष	
	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष
हिसाब एव रिकार्ड अनुरक्षण	26.2	25.11	11.9	3.5	25.8	30.14	18.9	23.75	17.2	17.5
पालन के बाद अनुरक्षण	10	7.1	18.22	81.3	26.58	26.8	20.1	27.86	25.1	30.11
बांस के खंभों की तैयारी	0	0	24.5	3.5	1.5	6.15	20	34.25	54	56.1
रस्सी की तैयारी	3	1.5	20.47	4.67	15.25	5.5	24.99	40.11	36.29	48.22
रोपण जाल की तैयारी	2.32	2.1	23.73	5.12	9.22	5.43	24.11	41.15	40.62	46.2
संग्रहण काल	22.5	23.38	1.5	0.5	27	21.89	20.5	20.9	28.5	33.33

नदीमुख/समुद्र तक किराए पर यान	1	1.5	20.5	3	0.5	2.1	22	29.28	56	64.12
संस्थागत क्रेडिट	25	21.1	2.1	2.3	45.13	24.16	15.4	17.23	12.37	35.21
विपणन	20.61	26	20	11	25.15	17	15.06	25.5	19.18	20.5
छिलकन	24.34	23.1	16.23	11.06	25.07	26.03	15.68	22.22	18.68	17.59
शंबु स्पैट संग्रहण	24	25.18	0	0	5.5	4.48	18.1	10.75	52.4	59.59
गैर संस्थागत क्रेडिट	20.01	22.89	3.98	7.46	34.99	19.4	26	17.41	15.02	32.84
संग्रहणोत्तर परिचालन	20.96	21.28	2.98	1	28.84	15.21	22.82	25.01	24.4	37.5
बेड़ा निर्माण	1	1	18.11	4	9.23	4.5	27.44	40	44.22	50.5
संतति रोपण की दर एवं रोपण	1	2	24.12	5.5	12.56	11.5	27.14	41.5	35.18	39.5
स्थान चयन	24	23.38	2	0	5.5	3.98	14	9.45	54.5	63.19
रोपण की गयी रस्सी बेड़े पर बांधना	0.5	3.5	39.65	15.5	11.05	10.5	8.59	27	40.21	42.11
कुल	14.10	14.38	14.11	5.30	18.17	13.81	20.05	26.19	33.76	40.73

सबसे प्रमुख आवश्यकता प्रशिक्षण और विपणन थी। शंबु और शुक्ति अत्यंत कमजोर एवं भंगुर संपदाएं होने की वजह से इनका द्रुत गति से विपणन इन एस एच जियों की गतिशीलता पर निर्भर है। इस दिशा में अच्छे परिणाम के लिए 'तकनीकी पहलुओं' और 'विपणन पहलुओं' पर उचित प्रकार का प्रशिक्षण अनिवार्य है। अगली प्रमुख आवश्यकता 'संपत्ति का अधिकार' थी। 'अनुचित व्यवहारों से सुरक्षा' दोनों समकक्षों की आवश्यकता का पहलु था।

मछुआरिनों की सामान्य बाधाएं

मलबार के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की सामान्य बाधाएं और स्वयं सहायक संघों के सदस्यों के रूप में सामना की जाने वाली बाधाएं सारणी 4 में दी गयी

सारणी 6: शंबु पालन की गतिविधियों में जेन्डर आवश्यकता

आवश्यकता का क्षेत्र	महत्वपूर्ण		कम महत्वपूर्ण		सबसे महत्वपूर्ण	
	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष
विस्तार सेवाओं की पहुँच	43.32	46.24	1.9	2.02	54.78	51.74
गुणतायुक्त संततियों की उपलब्धता	20	18.4	6.5	4.98	73.5	76.62
क्रेडिट	50.5	60	6	4.1	43.5	35.9
एक्स्पोज़र यात्रा	51.5	49.62	2.5	3.28	46	47.1
खेत प्रबंधन कार्य	4	3.47	7	6.97	89	89.56
विपणन	39	39.8		2	61	58.2
पैकिंग एवं परिवहन	17	17.1	9.54	10.78	73.46	72.12

संपत्ति अधिकार	18	11			82	89.05
अनुचित व्यवहारों से सुरक्षा	81.01	81.01	3.98	5.89	15.01	13.1
सामाजिक सहायता	35.5	32.84	0.5	1	64	66.16
समकक्ष से सहायता	50.35	51	2.5		47.15	49
समय पर संततियों की उपलब्धता (मात्रा)	8	1	0	0	92	99
खेत प्रबंधन में प्रशिक्षण	47.7	45	0.3	3.5	52	51.5
विपणन में प्रशिक्षण	3	2.08	0.5		96.5	98.02
शंबु पालन प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण	13	10.95	1	1	86	88.05
पैकिंग में प्रशिक्षण	12	7.47	18	20.88	70	71.65
मूल्य वर्धन में प्रशिक्षण	11	12.36	6	2.27	83	85.37
कुल	29.63	28.47	4.53	5.02	66.33	67.00

हैं। गरीब आजीविका की स्थिति, निरक्षरता, बेराज़गारी आदि सामान्य बाधाओं के बजाय एस एच जी के सदस्यों को अधिक स्ट्रेस झेलना पडता है। एस एच जी की बैठक का कार्यवृत्त एवं रिपोर्ट तैयार करना, बैठकों का आयोजन, बैंकिंग जैसे प्रक्रियात्मक बाधाओं की अपेक्षा विपणन की बाधा सबसे प्रमुख मानी जाती है।

मलबार में अध्ययन के अन्य परिणाम

स्वयं सहायक संघ के रूपायन के लिए कम से कम 36 महीनों का अनुभव होना चाहिए और यह एक व्यस्त प्रक्रिया है। इसके रूपायन स्तर, स्थिरीकरण स्तर और स्वयं सहायक स्तर होते हैं। मलबार में किए गए वर्तमान अध्ययन अभियान के आधार पर राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखों की तैयारी, अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा में सहभागिता, शंबु पालन पर क्षेत्रीय स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए प्रशिक्षण मैनुअल की तैयारी, केरल में शंबु पालन पर ह्रस्व चलचित्र और स्वयं सहायक संघों की विजय कहानी पर तीन भाषाओं में चलचित्र की तैयारी आदि साध्य हो गए।

मानसून के मौसम में पानी की लवणता कम होने की वजह से बारिश से पहले शंबु का संग्रहण किया जाना है। इस लिए एस एच जी द्वारा सफल रूप से शंबु संग्रहण किया गया। शंबुओं की उच्च बाजार मांग होने के कारण प्रति शंबु को 5/- रुपए और प्रति किलोग्राम शंबु मांस को 250/- रुपए का मूल्य प्राप्त हुआ। शंबु पालन के विभिन्न स्तरों में, विशेषतः संग्रहण में एस एच जी के पुरुष समकक्षों ने महत्वपूर्ण योगदान किया। महिलाओं के एस एच जी द्वारा चलाए जाने वाले शंबु पालन गरीबी हटाने और कम से कम 5 परिवारों की आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त कम उत्पादन निवेश से हरित शंबु की स्थानीय उपलब्धता सुनिश्चित करने और खाद्य शंबु के उत्पादों द्वारा अन्य जिलाओं से भी ग्राहकों को आकर्षित करने और महिलाओं को इस उद्यम के लिए प्रेरित करने में भी सहायक निकला। लिंग मुख्य धारा, महिला सशक्तीकरण और स्वयं सहायक संघों द्वारा समाज-आर्थिक उन्नयन से वल्लिकुन्नु ग्राम पंचायत के स्थानीय आर्थिक विकास में प्रगति हुई है।

निष्कर्ष

यह सच्च बात है कि कोई भी राष्ट्र अपने आधा प्रतिशत आबादी की उपेक्षा करके सामाजिक परिवर्तन एवं आर्थिक समृद्धि नहीं ला सकता है। द्रुत गति से आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए लिंग परक असंतुलन दूर करना आवश्यक है। सी एम एफ आर आइ ने खुले समुद्र एवं संरक्षित उपसागरों में शंबु पालन की प्रौद्योगिकी विकसित की है। यह प्रौद्योगिकी सरल और लागत अनुकूल भी है और केरल तथा कर्नाटक के मछुआरों द्वारा यह प्रौद्योगिकी स्वीकार की गयी है और उत्तर केरल के मलप्पुरम जिले के कई महिला स्वयं सहायक संघों ने इस में सफलता पायी है। अगर सही ढंग से प्रशिक्षित और दिशा निर्देश दिए जाने से महिलाएं इस अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी सकती हैं। मात्स्यिकी, जलकृषि, मोती उत्पादन, समुद्री उत्पाद विकास आदि क्षेत्रों में महिलाओं का अवसर बढ़ाया जा सकता है। अध्ययनों से व्यक्त हुआ है कि पुरुष एवं महिला सहभागिता, विशेषकर पति-पत्नी सहभागिता से बेहत्तर लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

पश्चिम तटों में शंबु पालन पूर्णतः महिलाओं पर केंद्रित है। निस्यंदित समुद्र जल के निर्मलीकरण प्लान्टों की सुविधा से द्विकपाटियों में मूल्य वर्धन किए जाने से इनकी निर्यात शक्यता बढ़ायी जा सकती है। निर्यात शक्यता के उद्देश्य से द्विकपाटी पालन के विभन्न स्तरों जैसे संतति रोपण, संग्रहण, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकिंग, विपणन आदि में मछुआरा सहकारी संघों को गठित करना अच्छा होगा। शंबु संतति की उपलब्धता सबसे प्रमुख बाधा होने के कारण सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी से बडे पैमाने में शंबु संतति उत्पादन के लिए प्रयास किया जाना चाहिए।

मलबार में महिला स्वयं सहायक संघों के जेन्डर परिप्रेक्ष्य पर किए गए अध्ययन में समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में गरीबी हटाने के कुछ टिप दिए गए हैं। इन ग्रुपों की सफलता की कहानियों को कृषि, वानिकी, उद्यान कृषि, कृषि पर आधारित व्यापार, जलक्षेत्र का विकास आदि दिशाओं में अपनाया जा सकता है। एस एच जी की गतिशीलता की विजय गाथाएं पहले ही स्पष्ट हुई हैं। इस तरह के ग्रुप सहयोग की कार्यविधियों को महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण और बाद में राज्य के स्थानीय विकास में स्थायी आधार के रूप में उपयुक्त किया जा सकता है। अंत में यह स्थापित किया जा सकता है कि स्वयं सहायक संघों द्वारा महिलाओं की समस्याओं का समाधान करते हुए उनको एकत्र करने से ही गरीबी को दूर किया जा सकता है।

द्विकपाटी पालन की गतिविधियाँ - चित्रों में :-

CMFRI
CMFRI

कदलुंडी के
शंभु कृषि
में स्त्रीयों के स्वयं सेवा संघ की
विजय गाथा
DVD
CMFRI